P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* May (Part-1)- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

मृदुला गर्ग के साहित्य मे स्त्री विमर्श सामाजिक संदर्भ

प्रियंका अरोड़ा
शोधार्थी
हिन्दी विभाग,
कला संकाय
भगवत विश्वविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत

राजेश कुमार शर्मा
शोध निर्देशक,
हिन्दी विभाग,
भगवत विश्वविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत

सारांश

मृदुला गर्ग ने हिन्दी कथा साहित्य के स्त्री विमर्श तथा नारी अस्मिता विषय से जुडे तथ्यों को कथा साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत कर स्त्री संवेदना की अभिव्यक्ति व नारी की समस्याओं को उकेरकर नारी विषमता को तथा पुरूष सत्ता द्वारा किये जाने वाले शोषण, अनैतिक संबंधों के यथार्थ को प्रस्तुत किया है। पुरातनकाल से आज तक नारी निरन्तर शोषण की शिकार हो रही है। चाहे माँ, पुत्री, पत्नी या अन्य कोई भी रूप में हो। आज की नारी शिक्षित भले ही हो गई किन्तु परिवार व समाज में पितृ सत्ता की अधीनता से जुड़ी हुई है। वह स्व विवेक से स्वतंत्र होकर कोई भी कार्य नहीं कर सकती इसी संदर्भ में मृदुला के सम्पूर्ण साहित्य में नारी अस्मिता से जुड़ी कहानियाँ व उपन्यासों में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

मुख्य शब्द : स्त्री विमर्श, परिस्थिति, भूमिका, सामाजिक मूल्य, सृजनशीलता, संस्कृति, स्वतंत्रता, सांमजस्य।

प्रस्तावना

लेखिका ने नैतिकता को अर्थहीन बताते हुए यह तर्क देती है कि "समाज द्वारा स्थापित नैतिक मूल्यों के भय से दबा देने से ही प्रेम अशरीरी नहीं बन जाता। केवल एक कुण्ठा का रूप धारण कर लेता है, जो उसे हर समय भयभीत बनाए रखती है जो पुरूष स्त्री के सम्मुख पड़ने से सिर्फ इसलिए कतराता है उसके भीतर काम तृष्णा इतने भयंकर रूप से ललचाती रहती है कि शरीर मात्र को देखकर वह विचलित हो सकता है उसे ब्रह्मचारी कहकर सम्बोधित करना एक मजाक ही है।" मृदुला जी का लेखन हमारे सामने प्रश्न खड़ा कर देता है कि नारी की स्वतंत्रता क्या नैतिक मूल्यों को तोड़कर सेक्स की मुक्ति पा लेने में है? एक साक्षात्कार में मृदुला गर्ग ने कहा था कि "यह संभोग चित्र पति पत्नी के मध्य था, जिस पर इतना बवाल मचाया गया था। संभोग के समय चिंतन में रत सहने वाले स्त्री पुरूष के गले नहीं उतरी।" मृदुला की नारी की खोज अस्मिता के अनुष्ठान पर पुरूष के साथ दैहिक संबंध स्थापित कर के ही पूर्ण होता है। वह चकरघिन्नी सी वृत के इर्द गिर्द घूमती रहती है। अंततः खाली होकर किसी और क्षण को पाने के लिए निकल पड़ती है। मृदुला कहती है "कम से कम मुझे तसल्ली तो होगी कि जो कुछ मैं कर सकती थी, मैने किया।"

अध्ययन का उद्देश्य

1. पारिवारिक विघटन
2. परिवार नारी की भूमिका
3. स्त्री जाति की विद्रोहधर्मिता
4. पितृ सत्ता के नये रूप
5. जीवन शैली में आया बदलाव
6. आधुनिक 'बोल्ड' स्त्री का रूप

सामाजिक सन्दर्भ

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर परस्पर जीवन क्रम के प्रत्येक विषय से जुड़कर आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। दायित्वों का निर्वाह समाज में रहकर करने पर ही सामाजिकता को प्रकट कर सकता है। समाज एक ऐसा संगठन है जिसके अभाव में मानवीय संवेदनाओं की कल्पना करना असंभव है। व्यक्ति समाज का एक सदस्य है, परस्पर सम्बन्धों का समावेश समाज द्वारा ही संभव है। इस तरह समाज सभी प्रकार के सामाजिक सम्बन्धों का जाल है।

समाज शब्द की व्यापकता को समझना व्यक्ति का दायित्व है। समाज द्वारा ही आवश्यकताओं की पूर्ति संभव हो पाती है। समाज कोई अखण्ड व्यवस्था

नहीं है। यह परिवार समुदाय व संस्थाओं का समूह है। अतः व्यक्ति समाज की प्रथम इकाई है। व्यक्ति के अभाव में समाज की कल्पना व्यर्थ है। रूसो ने इस सन्दर्भ में ठीक ही कहा है ''समाज पृथक–पृथक व्यक्तियों का एक यांत्रिक समूह है। व्यक्ति एक दूसरे से स्वतन्त्र है, वे स्वतन्त्र जीवन यापन करते हैं, उनका एक दूसरे से समझौता होता है और समाज की रचना की जाती है। आज सामाजिक मूल्यों की होने वाली टकराहट ने मूल्यहीनता को प्रमुखता प्रदान की है तथा समकालीन साहित्यकारों ने इसे सामाजिक विश्रंखंलता की संज्ञा प्रदान की है।

प्राचीन रूढ़ियों एवम् आधुनिक विचारों के बीच सामाजिक खाई में समाज के बीच होने वाले मतभेदों को जातिवाद, धर्मान्धता एवम् उच्च व निम्न वर्ग की भावना का विरोध साहित्य में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। परिस्थितियों की चक्की में पिसने वाले मध्यम वर्ग की वस्तुस्थिति बहुत दयनीय हो जाती है। वर्तमान आदर्श के घिनौने रूप आज के कथा साहित्य की मूल संवेदना है। महिला कथाकारों ने अपने साहित्य सृजन में सामाजिक जीवन चक्र को उभार कर आम व्यक्ति की अन्तर्दषा को प्रकट किया है।

तेजस्वी कथाकार मृदुला गर्ग के साहित्य में उपन्यास हो या कहानी समाज प्रमुख है तथा अन्य बातें गौण है। इनकी खरीददार शीर्षक कहानी का यह अंष दष्ण्य है। जहां सामाजिक मूल्य कितने बदल गये हैं और औरत की जिन्दगी क्या हो गई है। मदन मोहन सक्सेना का वक्तव्य इस प्रकार है ''मनुष्य अपने उद्देष्यों को समाज में रहकर ही पूरा करता है। समाज के बाहर अच्छी तरह रहना और अपनी इच्छाओं की पूर्ति करना मनुष्य के लिए कष्टप्रद ही नहीं बल्कि असंभव है। साहित्य के सन्दर्भ में जैनेन्द्र का कथन ठीक है ''साहित्य कुछ है तो वह उन भावनाओं का नाम है जो समष्टि के साथ व्यष्टि की सामंजस्य सिद्धि का साधक हो। इस तरह व्यक्ति तथा व्यक्ति समूह सबका उत्थान साहित्य के मार्ग में से है क्योंकि साहित्य है ही उत्थान मार्ग का नाम। वैदिक काल से नारी को पूजय माना है, किन्तु सामाजिक परिवर्तन या परिस्थितियों ने उसकी गरिमा को कहीं न कहीं गहरी ठेस पहुंचाई है। पुरूषवादी सत्ता के मद के तले दबी नारी की दषा को मृदुला गर्ग ने अपने साहित्य के माध्यम से उजागर किया है। इनके उपन्यासों व कहानियों में स्त्रीवादी सामाजिक विमर्ष को नवीन मार्ग प्रशस्त किया है।

पारिवारिक विघटन

मनुष्य स्वभाव एवम् आवश्यकताओं से सामाजिक प्राणी है। समाज में आदर्श की स्थापना करने का श्रेय नारी शक्ति को है जो समाज को नवीन संस्कार प्रदान करती है। कथाकार मृदुला जी का साहित्य नारी शक्ति के ह्रास की कथा को प्रकट करता है। नारी की भूमिका परिवार का केन्द्र बिन्दु है। आधुनिक समाज में मध्यमवर्गीय पारिवारिक जीवन में व्याप्त विघटन का कारण आर्थिक विषमता तथा निरन्तर बढ़ती बेरोजगारी है। कहीं–कहीं हमारी पुरातन सड़ी गली परम्पराऐं हैं। कथाकार ने उस विघटन को स्पष्ट रूप प्रदान किया। व्यक्ति स्वतन्त्रता अथवा नारी स्वतन्त्रता, नारी अस्मिता के सन्दर्भ में नारी के विविध रूपों का उल्लेख किया है। मां, पत्नी, पुत्री, प्रमिका, बहन, बहु आदि की चर्चा की है। रिश्तों में होने वाले वैचारिक वैमनस्य को 'रंग–ढंग' के माध्यम से प्रस्तुत किया है। "मेरी मां की उम्र उस वक्त कुल अठारह बरस की थी और दो बार मां बन चुकने के बावजूद वह अपने को बेटी के आगे कुछ नहीं मान पाई थी। बेटी नहीं तो बहिन, वह भी बड़े भाई की लाडली छोटी बहिन जिसमें बेटी का भरपूर एहसास शामिल था। मेरे पिता से भी उनकी यही मांग थी – उन्हें पति ही नहीं पिता का भी प्यार दे। और वे देते थे। हालांकि उम्र में उनसे ज्यादा नहीं, केवल सात वर्ष बड़ें थे कि जिन्दगी ने उन्हें इतने कड़वे अनुभव प्रदान किए थे कि उनसे बीसियों साल बड़े हो गए थे।"

"उसके हिस्से की धूप" की मनीषा पति के स्वभाव की एकरसता से उबरने के लिए मधुकर की और खिंचती है तथा प्रेमाश्रय पर्यन्त मनीषा सोचती है। जीवन में पहली बार किसी ने उसे प्यार किया है। उसके पोर–पोर को, कण–कण को, उसके प्राण को रोम–रोम को उसकी हंसी और रूलाई को उसके विचार–सुविचार को।" इस प्रकार लेखिका के कथा साहित्य में मध्यमवर्गीय परिवारों में रिश्तों की खत्म होती अहमियत को यथार्थ में उद्घाटित कर मानवीय चेतना या स्त्री चेतना से जोड़ने का प्रयास किया है जो आठवें दशक की कहानियों का मूल बिन्दु रहा है। स्त्री–पुरूष को दाम्पत्य जीवन में व्याप्त कडवाहट, लड़के लड़कियों की मानसिकता एवम् बुजुर्गो के प्रति होने वाले अपमान को प्रकट किया है। पुरानी परम्परा व आदर्शों मर्यादा को भूलकर निजि स्वार्थ प्रेरित स्त्रियों की वस्तुस्थिति को प्रस्तुत किया है।

परिवार नारी की भूमिका

नारी को वैदिक काल या उससे पूर्व से समाज में सम्मान प्राप्त था। पितृ सत्ता की बात कहे तो पुत्री के बजाय पुत्र को प्रमुखता प्राप्त थी 'स्त्री का प्रथम कर्तव्य, पुत्र संतान को जन्म देना।" शतपथ ब्राहमण, एतरेय ब्राहमण में नारी को पुरूष का साथ देने की बात कही है किन्तु मूल अधिकारों से वंचित दिखाई देती है यह कैसी विडम्बना है जो नियम पुरूष के लिए अधिकार है, वे ही स्त्री के लिए दमन और शोषण को बढ़ावा देते हैं। अधिकारविहीन स्त्री मछली की तरह तड़पती थी। आज वह खुली सांस ले रही है तथा घुटकर जीने वाली जिन्दगी से मुक्ति की राह ढूंढ रही है। रामायणकालीन स्थितियों सिंहावलोकन करें तो सीता का परित्याग और उस त्याग का अभिनन्दन किया गया, क्योंकि राम ने श्रेष्ठ मूल्यों की रक्षार्थ प्रजा इच्छा का पालन किया। महाभारत में द्रोपदी का चीर हरण प्रसंग में कुछ ऐसी ही विषम परिस्थितियों का वर्णन दृष्टिगोचर होता है। नारी की विषमता पूर्ण स्थिति का जितना वर्णन किया जाये उतना ही थोड़ा है। हिन्दी साहित्य में साहित्यकारों में प्रसाद ने नारी को श्रद्दा, इड़ा, मति आदि नामों से अभिहित किया है तथा उसके सम्मान को बढ़ाया है नारी आदि काल, भक्ति का और रीति काल में कवियों में काव्य सृजन का केन्द्र बिन्दु रही है। युद्धों का वर्णन माया, कामिनी, भक्ति

मार्ग में बाधा तक माना है। "नारी तुम केवल श्रद्धा हो" कहकर नारी की गौरवमयी परम्परा को सम्मान दिया है।

स्त्री जाति की विद्रोहधर्मिता

स्त्री शोषण प्राचीनकाल से निरन्तर होता आ रहा है तथा उसकी मुक्ति के लिए सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रत्यक्ष तथा परोक्ष प्रयोग किये जाते रहे हैं। किन्तु नारी मुक्ति की कामना कपोल कल्पित सी प्रतीत होती है। उसकी इस विक्षिप्त स्थिति तक पहुंचाने के पीछे पुरूष सत्ता को जिम्मा जाता है। समाज में व्याप्त विषमता, लिंग, भेद, दहेज प्रथा, वैष्यावृत्ति, विवाहपूर्व सम्बन्ध, विवाहेत्तर सम्बन्धों का जिम्मेदार भी पुरूष ही है जो स्त्री शुचिता भंग करने हेतु सदैव आतुर रहता है। अनैतिक सम्बन्धों का आग्रह भी पुरूषवादी दकियानूसी सोच का ही प्रभाव है। लेखिका ने पुरूष सत्ता का दुराग्रह, घुटन, कुण्ठा, मध्यमवर्गीय, दाम्पत्य जीवन में व्याप्त विसंगतियों का खुलकर कथा साहित्य में विरोध किया है। गर्ग की सोच है कि ईष्वर प्रदत्त गुणों में क्या दोष है ? प्रकृति ने नारी को सहन शक्ति दी है जो पुरूष प्रदत्त कष्टों को सहने की असीम क्षमता प्रदान की है, मैत्रेयी की कथा में असफल पति को रतिसुख देती है। यदि स्त्री दूर हटे या मना करे तो विद्रोह उत्पन्न हो जाता है। पुरूष का राक्षस रूप सामने उभरकर आता है।

पितृ सत्ता के नये रूप

वैदिक कालीन समाज व्यवस्था पितृ सत्तात्मक थी। लिंग भेद था पुत्रियों की अपेक्षा पुत्रों को महत्व प्राप्त था। पत्नी बनकर सन्तानोत्पत्ति प्रमुख ध्येय था। निःसन्तान स्त्री को दस वर्ष बाद त्याग दिया जा सकता है। "जो स्त्री कन्या सन्तान को जन्म देती है उसे बारह वर्ष बाद, जिस स्त्री के बच्चे जीवित नहीं रहते हैं उसे पन्द्रह वर्ष बाद और कलह परायण स्त्री को तुरंत त्यागा जा सकता है।" शतपय ब्राह्मण में लिखा है जो अपुत्रा पत्नी है, वह परित्यक्ता है।" और पुत्र सन्तान के जन्म होने पर पति फिर विवाह करेगा।" एतेरय ब्राह्मण में अभिशाप की संज्ञा दी है। शतपय ब्राहमण में नारी दमन की बात कही है।

स्वतन्त्रता आन्दोलन में नारी का सवाल टकरा रहा था, राष्ट्रीय नेता अपने अधिकारों की बातें कर रहे थे। ब्राह्मणवादी नेता अंग्रेजो से स्वाधीनता की बातें कर करोड़ो अछूत बनाकर पराधीन कर रहे थे। पुरूष की उद्ण्डता को उमा नेहरू ने (स्त्री, दर्पण, मई 1918) में राष्ट्रवादी पुरूषों से पूछा ''केवल राष्ट्रीय स्वतन्त्रता ने तुम्हें कैसा मलिन, कैसा व्याकुल, कैसा दूषित बना दिया है ? फिर स्वयं सोचो, जिसके शरीर की जिसकी आत्मा की, जिसके हृदय की सारी स्वतन्त्रता लुट गई हो, उसका हार्दिक भाव कैसा हो सकता है ?" आज भारत को आजाद हुए 72 वर्ष होने पर भी नारी की स्वतन्त्रता में परिवर्तन तो आया है, किन्तु पाश्चात्य संस्कृति की रूढ़ियों का अनुसरण सा ही प्रतीत होता है। पुरूष की मानसिकता और संस्कार बहुत परिवर्तित हो चुके हैं। सब कुछ मिलने पर भी पुरूष सत्ता के अधीन रहना ही उसकी नियति बन गई है। स्त्रीमुक्ति की बात करने वाले ही स्त्री अधीनता रखते हैं। तथा समाज में उन्मुक्त रहकर अपनी अभिव्यक्ति में कहीं न कहीं पुरूष सत्ता सदैव हावी रहती है।

जीवन शैली में आया बदलाव

मृदुला गर्ग की कहानियों व उपन्यास साहित्य में कथानक पात्र एवम् शैली, परिवेश में पर्याप्त बदलाव आया है। क्योंकि पुरानी परम्परागत लेखन शैली व आधुनिक जीवन शैली में आये परिवर्तन का कारण पाश्चात्य संस्कृति के कारण आया बदलाव प्रमुख है। मध्यमवर्गीय पारिवारिक विघटन, दाम्पत्य जीवन में होने वाला परिवर्तन, अविवाहित यौन सम्बन्ध तथा विवाहेत्तर सम्बन्धों ने मानों पारिवारिक जीवन का आमूलचूल ही परिवर्तन कर दिया है। लेखिका ने भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति व पितृ सत्ता का प्रभाव माना है। उसके हिस्से की धूप की मनीषा मधुकर की प्रेमिका बनकर तुष्टि पाती है, किन्तु उससे विवाह करते ही उसे ऊब का एहसास होने लगता है, वह प्रेमिका बनकर ही तृप्त होती है। वह जितेन से कह देती है'' मैंने जितने जीवन में पहली बार प्यार किया है और पाया है। उसके आग्रह को मैं ठुकरा नहीं सकती, उसको मिटाना खुद को मिटाना होगा। प्रेम होता ही स्वार्थी है। इससे तुम्हें दुःख हो तो तुमसे क्षमा मांगती हूं। तुम्हारे लिए मेरी यही प्रार्थना है कि तुम भी ऐसा प्रेम पा सको।" "चित्त कोबरा" की मनु, अनित्य में रंजना, संगीता तथा काजल बैनर्जी तीनों एक ही पुरूष अविजित की प्रेमिका है। कठ गुलाब की स्त्री पात्र प्रेम में छली जाती है। अवकाष, रूकावट आदि कहानियां इस प्रकार के ज्वलंत उदाहरण है।

आधुनिक 'बोल्ड' स्त्री का रूप

हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श करने से पूर्व स्त्रियों के साथ होने वाली कठिनाइयों को जानना भी जरूरी है। समकालीन महिला कथाकारों का केन्द्र बिन्दु मध्यमवर्गीय पारिवारिक जीवन व उसमें उत्पन्न विसंगतियां, रूढ़ियां, दुराचार जैसे ज्वलंत प्रष्नों का अध्ययन अपेक्षित है। प्रख्यात लेखिका कृष्णा सोबती, अलका सारावगी, प्रभा खैतान, चित्रा मुद्गल, नासिरा शर्मा व मैत्रेयी पुष्पा प्रमृति लेखिकाओं की कृतियों को बोल्ड रचनाएं तथा इन्हें बोल्ड लेखिकाएं कही है। इन्होंने अपनी सृजनशीलता का परिचय दिया है वह आधुनिक की अहम् समस्या है। अतः इनके निजी अनुभवों ने कृतियों में प्रस्तुत कर अन्य के माध्यम से अभिव्यक्ति की है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में कहे तो मृदुला जी हिन्दी साहित्य में स्त्री मुक्ति व संघर्ष को उजागर करने वाली कथाकार है। इनकी कृतियों का विश्लेषण परख अध्ययन किया है जिस समाज में स्त्रीवर्ग की उपेक्षा से होती आ रही है। उसे उचित सम्मान दिलाने के लिए मृदुला जी मनीष जैसी आधुनिक नारी की संवेदना से जुड़ती है। महिला कथाकार होने के नाते पारिवारिक विघटन, कुण्ठा, घुटन, त्रासदी, विवाहपूर्व संबंधों एवं विवाहेत्तर संबंधों का यथार्थ चित्रण कर नारी अस्मिता की लडाई को निरन्तर लडने की चर्चा की है। आज की नारी पुरूष की अधिनता की अपेक्षा, नौकरी कर तथा दैनिक जीवन में काम काज कर अपने आत्मनिर्भरता का परिचय देती है। मृदुला जी ने अस्मिता की खोज में प्रयासरत चरित्रों के लिए जिन परिस्थितियों की सृष्टि की है उनमें नारी चरित्रों के

आचरण व पुरूष चरित्रों के आचरण में पुरातन एवं आधुनिक परिवेश में स्वतंत्रता प्रमुख है। उसके हिस्से की धूप रूकावट ऐसी ही कृति है। आज की नारी की पश्चिमीकरण वाली प्रकृति ने नैतिक मूल्यों को तोड़कर अति उपभोगवादी संस्कृति के बीच जुझती नारी की दशा को उद्घाटित किया है तथा समाज में नारी के महत्व को स्वीकारा है। मृदुला जी के पात्र नारी मापदण्डों पर खरे उतरते हें। अस्मिता के प्रति सजगनारी प्राचीन एवं नवीन मूल्यों को स्वीकार करती है। उसकी ईष्ट है पृथ्वी! वह पराशक्ति बनी पुरूष के आगे पीछे व्याप्त हो जाती है। समेट लेती है उसे अपने घेरे में।"

भूमण्डलीकरण के दौर में नारी की स्थिति के बिगड़ते स्वरूप को मृदुला ने नवीन अपने रूप में स्थापित किया है। कामकाजी नारी ने पुरूष के समझ अपनी योग्यता सिद्ध करके दिखा दिया कि मानसिक शक्ति में वह पुरूष से कम नही है। नारी ने अपना बौद्धिक स्तर ऊँचा उठा लिया है, किन्तु पुरूष की मानसिकता उसके प्रति क्षुद्र हो रही है। वह उसके अर्थोपार्जन को सहायिका के रूप में तो स्वीकारता है किन्तु औरत और मर्द का भेद मिटाने को तैयार नहीं हुआ। आज की कामकाजी स्त्री घर और कार्यालयों पर मोर्चा संभाले हुए है। उसके पूर्ववर्ती दायित्व ज्यों के त्यों है नौकरी स्व इच्छा है। दूसरी ओर बच्चों की हीनभावना की भी है। इस प्रकार हम देखते हैं कि नारी स्वातन्त्र्य के मार्ग में औरत का कामकाजी होना उसकी असफलता तथा शक्ति का प्रतीक है किन्तु खरीद फरोख्त के इस असुरक्षित वातावरण में उसे अपनी अस्मिता को सुरक्षित रखते हुए रास्ता तय करना होगा।

महिला कथाकार मृदुलागर्ग के कथा साहित्य में भारतीय संस्कृति की व्याख्या कर नारी जीवन से होने वाले जुड़ाव को कथा संगम करके, नारी मुक्ति की कामना की है। पुरूषवादी धारणा के विरूद्ध स्त्री मुक्ति हेतु संघर्ष की प्रेरणा है। वैदिक काल से आज तक पुरूष सत्ता की अधीनता स्वीकार करती नारी को अपने महत्त्व की पहचान बनाने में मनीष जैसी संघर्षशील सुशील प्रेमिका, परिश्रमी तथा त्याग की मूर्ति की चर्चा कर नारी उत्थान की बात कही है। ग्रामीण जीवन के कटु अनुभवों को कथा साहित्य के माध्यम से पाठकों के अन्तर्मन में स्थान बचा लिया है तथा ग्रामीण संस्कृति, तीज, त्योंहार, विवाह, परम्पराओं व रीति–रिवाजों का विशद विवेचन अपेक्षित है। आज नारी की शोषित–पीड़ित व पुराण अधीनत से मुक्ति दिलाने का संघर्ष प्रस्तुत करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

मृदुला गर्ग : चित कोबरा : 1979, पृ. 118
मृदुला गर्ग : चर्चित कहानियां : 1993, पृ. 31
मृदुला गर्ग : समागम : 1996 पृ. 48, पृ. 108
मृदुला गर्ग : रंग में ढंग : 1995, पृ. 27
संचेतना : दिसम्बर : 1996, पृ. 34
वैचारिक संकलन : अप्रेल 1998, पृ. 48
मृदुला गर्ग : उसके हिस्से की धूप : 1975, पृ. 148
हंस : नवम्बर–दिसम्बर : 1994, पृ. 137
कृष्णा सोबती : ऐ लड़की : 1991, पृ. 31
बोधायम धर्म सूत्र 2/4/6
शतपय ब्राह्मण 5/2/31/14
वशिष्ठ धर्मसूत्र 28/2–3
साहित्य का श्रेय और प्रेय : जैनेन्द्र कुमार : 1953, पृ. 313
रंग में ढंग : मृदुला गर्ग : 1995 पृ. 16
आपस्तब सूत्र 1/10–51–52